Teachingninja.in

Latest Govt Job updates

Private Job updates

Free Mock tests available

Visit - teachingninja.in

UPPSC-UPPCS
2018 Mains

Previous Year Paper

Hindi Literature Optional

Paper 2

Teachingninja.in

No. of Printed Pages : 4

1110808

2019

ISRO-32/II

हिन्दी साहित्य : प्रश्न-पत्र – II
HINDI LITERATURE : Paper – II

निर्धारित समय : तीन घंटे] [अधिकतम अंक : 200
Time Allowed : Three Hours] [Maximum Marks : 200

नोट : (i) कुल पांच प्रश्नों के उत्तर दीजिये।
(ii) प्रश्न संख्या एक और पांच अनिवार्य हैं।
(iii) प्रत्येक खंड से कम से कम दो प्रश्न किये जाने आवश्यक हैं।
(iv) सभी प्रश्नों के अंक प्रश्न के सम्मुख अंकित हैं।

1. किन्हीं दो अवतरणों की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिये। (20+20=40)

(क) निर्गुन कौन देस को बासी ?
मधुकर ! हंसि समुझाय सौंह दै बूझति सांच न हांसी।।
को है जनक, जननि को कहियत, कौन नारि, को दासी ?
कैसो बरन, भेस है कैसो केहि रस के अभिलासी।।
पावैगो पुनि कियो आपनो जो रे ! कहैगो गांसी।।
सुनंत मौन है रह्यो ठग्यो सो सूर सबैमति नासी।।

(ख) चढ़ा असाढ़ गगन घन गाजा, साजा विरह दुन्द दल बाजा।
धूम, साम, धौरे घन धाए, सेत धजा बग पांति देखाए।
खड़ग-बीजु चमकै चहुं ओगा, बुंद बान बरसहिं घन घोरा
ओनई घटा आई चहुं फेरी, कंत उबारु मदन हौं घेरी।
दादुर मोर कोकिला, पीऊ, गिरे बीजु घट रहै न जीऊ।
पुष्य नखत सिर ऊपर आवा, हौं बिनु नाह, मंदिर को छावा
अद्रा लाग, लागि भुइं लेई, मोहि बिनु पिउ को आदर देई।
जिन्ह घर कंता ते सुखी, तिन्ह गारौ औगर्व।
कंत पियारा बाहिरै, हम सुख भूला सर्व।।

Scanned by CamScanner
Teachingninja.in

(ग) दुःख की पिछली रजनी बीच विकसता सुख का नवल प्रभात,
एक परदा यह झीना नील छिपाए है जिस में सुख गात।
जिसे तुम समझे हो अभिशाप, जगत की ज्वालाओं का मूल–
ईश का वह रहस्य वरदान कभी मत इसको जाओ भूल।
विषमता की पीड़ा से व्यस्त हो रहा स्पंदित विश्व महान,
यही दुख–सुख विकास का सत्य यही भूमा का मधुमय हाल।

(घ) एक कठोर कटाक्ष तुम्हारा अखिल प्रलयकर
सभर छेड़ देता निसर्ग संसृति में निर्भर !
भूमि चूम जाते अभ्रंलिह सौध, शृंगवर
नष्ट–भ्रष्ट साम्राज्य – भूति के मेघाडंबर !
अये एक रोमांच तुम्हारा दिग्भूकंपन,
गिर–गिर पड़ते भीत पक्षि पोतों से उड़गन।
आलोड़ित अम्बुधि फेनोन्नत कर शत–शत फन,
मुग्ध–भुजंगम–सा, इंगित पर करता नर्तन !
दिक् पिंजर में बद्ध, गजाधिप–सा विनितानन।

2. (क) रहस्यवादी कवि के रूप में स्थापित कबीर की कविता में धर्म के पाखण्ड, कर्मकांड और आडंबर पर तीखे प्रहार किये गये हैं – कथन की समीक्षा कीजिये। 15

(ख) तुलसी के समन्वयवाद पर प्रकाश डालिये। 15

(ग) भ्रमरगीत के पद सूरदास की पुष्टिमार्गी भक्ति के श्रेष्ठ उदाहरण हैं– कथन की सोदाहरण विवेचना कीजिये। 10

3. (क) बिहारी की कविता में कला और भाव दोनों पक्ष प्रबल हैं जो किसी अन्य रीति कालीन कवि की कविता में नहीं हैं –कथन की समीक्षा कीजिये। 15

(ख) 'राम की शक्ति पूजा' एक महाकाव्यात्मक रचना है – कथन की समीक्षा कीजिये। 15

(ग) पठित रचना के आधार पर पंत के प्रकृति–चित्रण की विशेषताएँ सोदाहरण बताइये। 10

4. (क) प्रयोगवादी कविता के विकास में अज्ञेय की भूमिका तथ्यों के साथ स्पष्ट कीजिये। 15

(ख) 'अंधेरे में' कविता के माध्यम से मुक्तिबोध के काव्य में फैण्टेसी पर प्रकाश डालिये। 15

(ग) 'नागार्जुन की कविता वर्ग–संघर्ष की कविता है' कथन की समीक्षा कीजिये। 10

Scanned by CamScanner
Teachingninja.in

खण्ड – ब

5. किन्हीं दो गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिये। (20+20=40)

(क) पवित्रता की माप है मलिनता, सुख का आलोचक है दुःख, पुण्य की कसौटी है पाप। विजया! आकाश के सुन्दर नक्षत्र आँखों से केवल देखे ही जाते हैं, वे कुसुम-कोमल हैं कि वज्र-कठोर- कौन कह सकता है। आकाश में खेलती हुई कोकिल की करुणामयी तान का कोई रूप है या नहीं, उसे देख नहीं पाते। शतदल और पारिजात का सौरभ बिठा रखने की वस्तु नहीं। परन्तु संसार में ही नक्षत्र से उज्ज्वल-किन्तु कोमल- स्वर्गीय संगीत की प्रतिमा तथा स्थाई कीर्ति सौरभवाले प्राणी देखे जाते हैं। उन्हीं से स्वर्ग का अनुमान कर लिया जा सकता है।

(ख) श्रद्धा और प्रेम के योग का नाम भक्ति है। जब पूज्य भाव की वृद्धि के साथ श्रद्धाभाजन से सामीप्य-लाभ की प्रवृत्ति हो, उसकी सत्ता के कई रूपों के साक्षात्कार की वासना हो, तब हृदय में भक्ति का प्रादुर्भाव समझना चाहिये। जब श्रद्धेय के दर्शन, श्रवण, कीर्तन, ध्यान आदि से आनंद का अनुभव होने लगे-जब उससे संबंध रखने वाले श्रद्धा के विषयों के अतिरिक्त बातों की ओर भी मन आकर्षित होने लगे, तब भक्तिरस का संचार समझना चाहिये। जब श्रद्धेय का उठना, बैठना, चलना-फिरना, हँसना-बोलना, क्रोध करना आदि भी हमें अच्छा लगने लगे तब हम समझ लें कि हम उसके भक्त हो गये हैं।

(ग) गांव के लोग बड़े सीधे दीखते हैं; सीधे का अर्थ यदि अबूझ, अज्ञानी और अन्धविश्वासी हो तो वास्तव में सीधे हैं वे। जहाँ तक सांसारिक बुद्धि का सवाल है वे हमारे और तुम्हारे जैसे लोगों को दिन में पांच बार ठग लेंगे। और तारीफ यह है कि तुम ठगी जाकर भी उनकी सरलता पर मुग्ध होने के लिए मजबूर हो जाओगी।

(घ) और तब एकाएक मैं ने जाना कि वह भावना मिथ्या नहीं है। मैं ने देखा सचमुच उस कुटुम्ब में कोई गहरी भयंकर छाया घर कर गयी है, उनके जीवन के इस पहले ही यौवन में घुन की तरह लग गयी, उसका इतना अभिन्न अंग हो गई है कि वे उसे पहचानते ही नहीं, उसी की परिधि में घिरे हुए चले जा रहे हैं।

6. (क) स्कन्द गुप्त नाटक के आधार पर जयशंकर प्रसाद की नाट्य कला का विश्लेषण कीजिये। 15

(ख) भाव और मनोविकार की परिभाषा देते हुए आचार्य शुक्ल की दृष्टि से इनमें अंतर बताइये। 15

(ग) पठित निबंध के आधार पर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की निबंध शैली की विशेषताएँ बताइये। 10

Scanned by CamScanner
Teachingninja.in

7. (क) 'गोदान' प्रेमचंद की सर्वोत्तम कृति है- कथन की समीक्षा कीजिये। 15

(ख) 'मैला आंचल' के आधार पर आंचलिक उपन्यास की विशेषताएं बताइये। 15

(ग) 'हिन्दी उपन्यासों में सामाजिक यथार्थ का चित्रण' पठित उपन्यासों के आधार पर बताइये। 10

8. (क) प्रेमचंद और प्रसाद की कहानी -कला में अंतर बताइये। 15

(ख) 'रोज' कहानी अपने समय की अन्य कहानियों से किस तरह भिन्न है ? स्पष्ट कीजिये। 15

(ग) 'वापसी' कहानी की मूल भावना का चित्रण उदा. सहित कीजिये। 10

1063 665

Scanned by CamScanner
Teachingninja.in